

()

*

// :

// :

()

**The Effects of Similitude on Al-Mubarrad's Grammatical
Thought: A Study in His Book "Al-Muqtadab"**

Dr. Abdurrahman Awdah Aljohani

Abstract

This study aims at emphasizing the significance and effects of similitude/resemblance on Al-Mubarrad's grammatical thought; it also aims to identify the extent to which Al-Mubarrad made use of this phenomenon in his book, Al-muqtadab, to interpret various grammatical rules as well as form his own syntactical principles, trace their origins, and justify them. The study finds that Al-Mubarrad resorted to this phenomenon, resemblance, intentionally to justify his ideas and interpret some grammatical rules that can not be interpreted without using the similitude.

Keywords: Al-Mubarrad, Al-Muqtadab, Grammatical.

()

:

()

()

() ()

() () () ()

() () () () ()

()
()
()
()
()

()

()

:

()

:

()

...

...

" () .
()" ...

...

" : .

:

...

()ⁿ

()

: : ()

/

:

: : ()

- | -

() / : ()

: ()

/

- :

()

() /

/ : ()

:

()

():

•

•

•

•

•

()

•

()

•

()

•

•

() ()

•

() ()

•

() ()

•

•

() ()

•

:

:

()

()

":

:

:

()"

"

"

"

()"

()

:

: ()

()

:()

()

-

.)

)

(

"

.)"

:

:

.)

.

:

()

:

()

:

()

()

()

() :

:

" :

" :

()"

()"

:

:

()...

()

()"

" :

()

() :

()

()

()

()

()

()

()

() () ()

" () ()

:

()"

()

()

()

()

()

()"

"

()

:

"

..."

()

:

()

:

"

.

. ()
. ()
. ()
. ()

()



...

:

()ⁿ

()

()

()

^()()

()

()

()

()

()

()

^()()

()

()

:

^()()

()

()

:

()

()

()

()

()

()

/ () ()



()

:

()

:

()

()

:

.

:

.

:

:

:

:

()

:



.

:

()

:

/

:

:

.

.

.

:

()

:

.

:

.

:

.

-

()

()

()

:

" :

()"

:

()

:

()

:

()

:

:

-

()

.

-

: ()

:

()

-

()

"

.()"

: ()
:

:
: ()
:

:
:

.()

:

:

:

.()

()

.()

:

. ()

. - ()

: - ()

. - ()

. - " " : : ()

. " " : : ()

()

:" : . :

" ()

() " ()

()

وَكَلْبُهُمْ بَسِيطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيدِ ﴿١٨﴾

()

:"

()

() " : "

:" () " :

:" ()

:" ()

- : : ()

:"

:"

:" ()

:" ()

:" ()

:" ()

()ⁿ

:
:

()

()

:

:

()

:

:

()

:

.

.

()

()

() ()

()

()

()

:

()

-

:

()

/

()

-

-

:

()

.

()

()

()

()

()

":

"

()

: ...

:

()

()

()

()

()

()

()

"

":

()

"

"

"

()

()

...

"

"

()

()

()

()

()

:

()

()

()

:

()

()

:

()

:

:

.

()

() " :

()"

:

:

()

" :

()"

() ()

() : إِلَّا تَصُرُّوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ثَانِيَ اثْنَيْنِ

إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا ﴿٤٥﴾ ()

:

: ()

.()

" :

()

... ..

:

:

()"

()

()

()

()

()

()

()

()

(

:

()

()

()

()

()

" :

()"

:()

" :

()

()

:

()"

:

:

()

:

()

:

()

()

: ()

()

()

()

()

:

()

:()

()

:

()

()

()

()

()

: ()

()

()

()

()

()

()

:

"

()

()

()

/ : ()

: ()

: - ()

()

()

()

()

()

“ :

()

...

()

.()”

()

.()

()

.()

:

”

:

()”

:

:

:

:

()

.()

:

.()

” ” ()

: : ()

.()

- ()

/ () ()

()

()

()

()

()

.

:

:()

()

.

()

.()

" :

()

.()

()

()"

()

()

()

.()

()

:

()

:

:

()

:

()

:

()

()

.

" :

()

:

()

()

()

()

﴿ لَوْ كَانَ ﴾ :

()

()

﴿ فِيهِمَا ءِلَهَةٌ إِلَّا اللَّهُ لَفَسَدَتَا فَسُبْحَانَ اللَّهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴾ (٢٢) ﴿ (١)

()

:

() ()

()

:

:

:

:

﴿ مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرُ أَمْثَالِهَا وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى إِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ ﴾ (١)

﴿ لَا يُظَلَّمُونَ ﴾ (١٣) ﴿

:

":

:

...

()"

()

: ()

" "

()

()

()

:() ()

.()

.

()

()

()

()

": .

()

.()"

()

()

()

": .

()

()

:

()

:

()

.()"

.

()

()

.()

()

()

()

.()

()

()

()

()

()

()

:

()

()

()

:

() ﴿قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ﴾

:

:

:

:()

:()

()

()

:

:

:

:()

:()

()

:()

()

()

()

()

()

:

()

:

()

:

. () :

. ()

"

()"

: () ()

:

: ()

()

() ... " : .

: :

()"

()

.

: : . ()

. . ()

. - : . ()

()

:

()

.

.